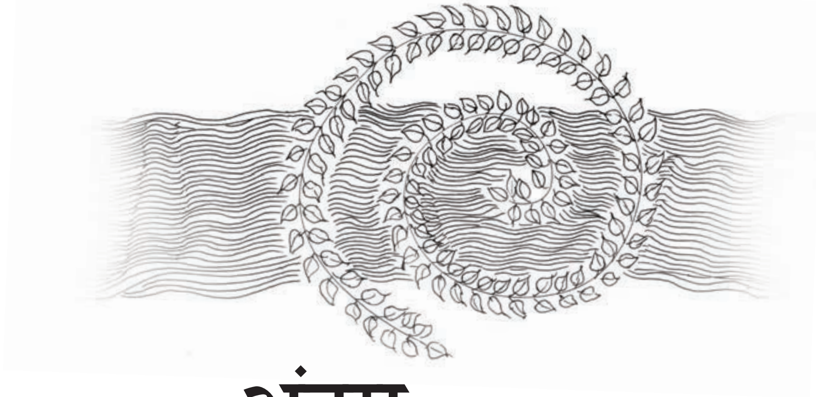

अंतरा

भाग 1

कक्षा 11 के लिए ऐच्छिक हिंदी की पाठ्यपुस्तक

11069

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

11069 – अंतरा (भाग 1)
कक्षा 11 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-527-X

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

प्रथम संस्करण
मार्च 2006 चैत्र 1927

पुनर्मुद्रण
मार्च 2007 फाल्गुन 1928
अक्तूबर 2007 अश्विन 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
दिसंबर 2009 पौष 1931
जनवरी 2012 माघ 1933
जनवरी 2013 माघ 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
नवंबर 2014 कार्तिक 1936
मई 2016 वैशाख 1938
दिसंबर 2016 पौष 1938
दिसंबर 2017 पौष 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941
जुलाई 2021 श्रावण 1943
नवंबर 2021 अग्रहायण 1943

PD 50T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

₹ 70.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा आई.जी. प्रिंटर्स प्रा. लि., 104, डी.एस.आई.डी.सी. कॉम्प्लेक्स, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज़-I, नयी दिल्ली- 110 020 द्वारा मुद्रित।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*विपिन दिवान*
संपादक	:	*मीरा कांत*
उत्पादन अधिकारी	:	*ए. एम. विनोद कुमार*

आवरण एवं सज्जा
कल्याण बनर्जी

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी

इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जानेवाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 दिसंबर 2005

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *पूर्व प्रोफ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

कमला प्रसाद, *उपाध्यक्ष,* केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

चंद्रकांत देवताले, *कवि* एवं *साहित्यकार,* उज्जैन, मध्य प्रदेश।

नज़ीर मोहम्मद, *प्रोफ़ेसर* (अवकाश प्राप्त), अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़।

मंजुरानी सिंह, *पी.जी.टी.* (हिंदी), केंद्रीय विद्यालय, जे.एन.यू. परिसर, नयी दिल्ली।

मंजुला माथुर, *प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

महेंद्रपाल शर्मा, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली।

रामगोपाल वर्मा, *प्राध्यापक,* दिल्ली पब्लिक स्कूल, आर.के.पुरम्, नयी दिल्ली।

सदस्य-समन्वयक

लालचंद राम, *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अकादमिक सहयोग के लिए हम दिलीप सिंह, *कुलसचिव,* दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई; गोविंद प्रसाद, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली; दुर्गा प्रसाद गुप्ता, *रीडर,* हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली; जयंती उपाध्याय, *पी.जी.टी.,* केंद्रीय विद्यालय, दिल्ली कैंट; गुरुदयाल कनौजिया, राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, रजोकरी, नयी दिल्ली के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

जिन लेखकों और कवियों की रचनाएँ इस पुस्तक में सम्मिलित की गई हैं उनके स्वत्वाधिकारियों के प्रति एवं कई रचनाकारों के चित्र उपलब्ध कराने के लिए राजकमल प्रकाशन का हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए *कंप्यूटर स्टेशन इंचार्ज* परशराम कौशिक; *कॉपी एडीटर* अदिति ठाकुर, सुप्रिया गुप्ता, प्रमोद कुमार तिवारी और समीना उस्मानी; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* सचिन कुमार तथा जय प्रकाश राय के हम आभारी हैं।

पाठ्यपुस्तक के बारे में

यह पाठ्यपुस्तक 11वीं कक्षा में ऐच्छिक हिंदी पढ़नेवाले विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। इसमें साहित्य की विविध विधाओं संबंधी नौ गद्य रचनाएँ तथा दस कवियों की कविताएँ संकलित हैं। पाठों का चयन इस प्रकार किया गया है कि रचनाओं के माध्यम से हिंदी गद्य और कविता का विकास-क्रम रेखांकित किया जा सके। साथ ही बदलते हुए सामाजिक भावबोध को भी इन रचनाओं के माध्यम से देखा जा सकता है।

हिंदी साहित्य में गद्य के निर्माण और विकास का काल आधुनिक युग रहा है। गद्य की विभिन्न विधाओं का इस समय विकास हुआ और हिंदी भाषा की वह अभिव्यक्ति-क्षमता सामने आई जिसमें विभिन्न भावबोध और सामाजिक सरोकार उजागर हुए। इसके साथ ही यह भी दिखाई देता है कि खड़ी बोली हिंदी गद्य की भाषा बनकर विकसित हुई। चयनित पाठ इस बात का प्रमाण हैं।

हिंदी गद्य के विकास में भारतेंदु का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वे हिंदी गद्य के जन्मदाता कहे जाते हैं। अपने नाटकों और लेखों के माध्यम से उन्होंने मिश्रित हिंदी शैली की आधारशिला रखी थी। भारतेंदु के गद्य में ब्रज तथा हिंदी की अन्य बोलियों का प्रभाव परिलक्षित होता है। भारतेंदु का जो पाठ यहाँ दिया गया है, वह अनेक दृष्टियों से विशिष्ट है। यह एक भाषण है, इसलिए इसकी भाषिक प्रकृति बोलियों के प्रभाव से युक्त है। दूसरे यह कि भारतेंदु के समाजचेता व्यक्तित्व का यह प्रतिबिंब है, जो भाषण के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। तीसरे यह कि इस पाठ में तत्कालीन सामाजिक स्थितियों और उनकी कमज़ोरियों पर बेबाक टिप्पणी की गई है तथा एक सशक्त राष्ट्र के रूप में भारत का निर्माण किस तरह हो सकता है, इसकी ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया है। कहना न होगा कि भारतेंदु ने जिन स्थितियों में सुधार की बात कही है उनमें से कई आज भी भारतीय समाज में उपस्थित हैं।

इस पाठ्यपुस्तक में पाँच कहानियाँ हैं। पाँचों का अपना एक सामाजिक ऐतिहासिक संदर्भ और महत्त्व है। हिंदी गद्य के विकास में कथा साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके दो कारण देखे गए हैं – एक तो यह कि कहानियाँ परिवेश और पात्रों का यथार्थ चित्र खड़ा कर पाती हैं। दूसरे यह कि सामाजिक वर्ग विभाजन की त्रासदी को कथा साहित्य तीक्ष्णता के साथ अभिव्यक्त करने की क्षमता रखता है। विद्यार्थी चयनित कहानियों को पढ़कर न केवल रचनाओं की सामाजिक प्रतिबद्धता से परिचित होंगे, बल्कि वे हिंदी भाषा की सामाजिक शैलियों की अपार शक्ति से भी लाभ उठा सकेंगे।

पाँचों कहानियाँ अपने सामाजिक सरोकारों में अलग–अलग धाराओं पर खड़ी हैं। ये मिलकर भारतीय समाज की एक पूरी तसवीर विद्यार्थियों के सामने रखेंगी। ये कहानियाँ हिंदी कथा साहित्य के विकास–क्रम का भी स्वतः परिचय देती हैं। इसमें एक कहानी प्रेमचंद की 'ईदगाह' है, जो बाल–मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। दूसरी कहानी अमरकांत की 'दोपहर का भोजन' है। कथाकार अमरकांत प्रेमचंद की परंपरा के माने जाते हैं। सामाजिक चेतना के स्तर पर अमरकांत भी प्रेमचंद की ही भाँति सामाजिक विडंबनाओं को सूक्ष्मता से समझते हैं और उसे अत्यंत सांकेतिकता के साथ व्यक्त करते हैं। यह कहानी भी बातों–बातों में ही समाज के एक निर्मम यथार्थ को प्रकट करती है। तीसरी कहानी 'गूँगे' रांगेय राघव की है। उनकी दृष्टि इतिहास और लोक से आबद्ध थी। इस कहानी में उन्होंने एक गूँगे–बहरे बालक के माध्यम से मानव संवेदना के टूटते हुए तंतुओं की ओर इशारा किया है। सामाजिक यथार्थ से जुड़ी चौथी कहानी ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'खानाबदोश' है, जिसमें मज़दूरों के जीवन–संघर्ष को रूपायित किया गया है। शहरों के विस्तार से समस्त भारत में मज़दूरों का एक नया समाज बना है। छोटे नगरों, कस्बों और गाँवों से मज़दूर महानगरों की ओर पलायन करते हैं और अपने श्रम के बल पर दूसरों के रहने के लिए अट्टालिकाएँ खड़ी करते हैं, पर उनके जीवन में एक झोंपड़ी का सपना भी सपना ही रह जाता है। कहानी का केंद्रीय बिंदु यही है। पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानी 'उसकी माँ' आज़ादी की लड़ाई से संबंधित एक मार्मिक कहानी है।

इस पुस्तक में कहानियों के अतिरिक्त हिंदी गद्य की अन्य विधाओं को भी सम्मिलित किया गया है। 'टार्च बेचने वाले' प्रसिद्ध लेखक हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचना है। उनका व्यंग्य लेखन कहानी के निकट है तथा उनकी कथात्मकता व्यंग्य को सहज संप्रेषणीय बना देती है। 'टार्च बेचने वाले' भी ऐसी ही रचना है।

व्यंग्य के बाद जीवनी विधा को स्थान दिया गया है। सुधा अरोड़ा की रचना 'ज्योतिबा फुले' एक प्रेरक रचना है। महात्मा फुले जैसे व्यक्तियों की छाप भारतीय जनमानस पर बहुत गहरी पड़ी है। पुराणपंथी ब्राह्मण समाज ने फुले की उदार सामाजिक दृष्टि की अवहेलना ही नहीं की, बल्कि सामाजिक उत्थान के लिए किए गए उनके प्रयत्नों के रास्ते में रोड़े भी अटकाए। फुले और उनकी पत्नी ने स्त्री-शिक्षा तथा अछूतोद्धार का प्रण लिया था। भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता के पहले सामाजिक सुधार के स्वर चारों तरफ़ गूँजे थे। महाराष्ट्र में यह स्वर महात्मा फुले का था। आडंबरों, पाखंडों में जकड़े समाज को मुक्त करने की यह जद्दोजहद तीव्र-से-तीव्रतर होती गई। इसी तीव्रता का वर्णन इस जीवनी में हुआ है।

अगली रचना 'नए की जन्म कुंडली : एक' नयी कविता के प्रसिद्ध कवि और आलोचक मुक्तिबोध की एक साहित्यिक की 'डायरी' का एक निबंध है। डायरी शैली में लिखी इस रचना के सरोकार भी व्यापक हैं। मुक्तिबोध स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। वे केवल कवि ही नहीं महत्त्वपूर्ण चिंतक और विचारक भी हैं, जिन्होंने हिंदी आलोचना को नया आयाम दिया है।

गद्य खंड की अंतिम रचना है भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?'

गद्य खंड की सभी रचनाएँ अपने समय का प्रतिनिधित्व करनेवाली हैं। इन रचनाओं में समाज, संस्कृति और इतिहास से संबंधित कई विचारणीय बिंदु समाहित हैं। इनके अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी गद्य के विकास-क्रम से भी परिचित हो सकेंगे।

हिंदी कविता लगभग एक हज़ार वर्षों की यात्रा तय कर चुकी है। इस लंबी विकास यात्रा को एक पाठ्यपुस्तक में स्थान दे पाना संभव नहीं है। हमारा प्रयास यह है कि ग्यारहवीं और बारहवीं दोनों कक्षाओं के माध्यम से हिंदी के कवियों से विद्यार्थियों का इस तरह परिचय हो कि वे कविता के विकास-क्रम को भी जान सकें।

भक्तिकाल को हिंदी कविता का स्वर्ण युग कहा जाता है। इसी युग में कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, मीरा, रैदास, दादू जैसे संत-भक्त कवि हुए हैं। इस पुस्तक में भक्तिकाल के दो प्रतिनिधि कवियों – कबीर और सूर को स्थान दिया गया है। हिंदी के विद्यार्थी दसवीं कक्षा तक कबीर से बहुत कुछ परिचित हो जाते हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कबीर के जो दो पद यहाँ दिए गए हैं, उनमें से एक सामाजिक बुराइयों पर केंद्रित है और दूसरा स्त्री की समस्या पर कबीर की दृष्टि का परिचायक है। दोनों पद अपनी भावपरकता और संरचनागत रचाव में नितांत विशिष्ट और अलग तरह के हैं।

सूर कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि माने जाते हैं। अष्टछाप के कवियों में भी उनका प्रथम स्थान है। यहाँ सूर के दो पद दिए गए हैं। एक में कृष्ण की बाललीला का मनोहारी चित्रण है। दूसरे में राधाकृष्ण के प्रेम का शृंगारिक वर्णन है।

भक्तिकाल के बाद रीतिकाल आता है। आलंकारिकता और शृंगारिकता रीतिकालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्ति रही है। यहाँ इस युग के दो कवियों – देव और पद्माकर से परिचित कराया जा रहा है।

देव के तीन छंद इस पुस्तक में दिए गए हैं। दो में विप्रलंभ (विरह) शृंगार का वर्णन है, जिसमें रीतिकालीन काव्य-रूढ़ियों का पूरी तरह पालन हुआ है। तीसरा छंद सामाजिक यथार्थ से जुड़ा हुआ है, जिसमें तत्कालीन सामंती समाज के भोग-विलास पर देव ने चोट की है। पद्माकर रीतिकाल के परवर्ती कवियों में एक हैं, जिनमें

सौंदर्य की परख की अद्‌भुत क्षमता है। इस पाठ्‌यपुस्तक में उनके भी तीन छंद दिए गए हैं, जो प्रकृति और श्रृंगार से संबद्ध हैं।

आधुनिक हिंदी कविता में छायावाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी इसके प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। यहाँ सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की रचनाएँ चुनी गई हैं। पंत की एक लंबी कविता 'संध्या के बाद' इस पुस्तक में दी गई है। यह कविता पंत के प्रसिद्ध काव्य-संग्रह 'ग्राम्या' में संकलित है। छायावाद के परंपरागत प्रभाव से मुक्त होकर पंत ने जब प्रगतिशील रचनाधर्मिता की ओर रुख किया तब 'ग्राम्या', 'कला और बूढ़ा चाँद', 'युंगात' और 'परिवर्तन' जैसे काव्य-संग्रह सामने आए। 'संध्या के बाद' कविता में पंत के दोनों रूप संयोजित दिखाई देते हैं। महादेवी की दो कविताएँ हैं और दोनों ही अति लोकप्रिय हैं। 'जाग तुझको दूर जाना' एक सुंदर प्रयाण गीत है, जिसमें महादेवी ने मनुष्य से कोमल भावों को छोड़कर जीवन-संघर्ष को अपनाने का आह्वान किया है। 'सब आँखों के आँसू उजले' गीत में दुख और आँसू की परिणति उमंग और आशा के रूप में हुई है। महादेवी के ये दोनों गीत उनकी रहस्यानुभूति और दुखवाद से अलग भावभूमि पर रचे गए हैं।

हिंदी साहित्य में छायावाद के परवर्ती दिनों में एक अन्य प्रकार की स्वच्छंदतावादी काव्य-प्रवृत्ति उत्पन्न हुई। यह काव्य-प्रवृत्ति भी मूलतः रोमांटिक ही थी, किंतु इसमें हृदय की सहज अनुभूतियों की अभिव्यक्ति पर छायावाद से कहीं अधिक बल दिया गया। भाषा की दृष्टि से यह काव्य-प्रवृत्ति बोलचाल के मुहावरे के अधिक निकट थी। इस काव्य में वैयक्तिकता तथा निराशा का स्वर भी तीखा है। अपने लोकप्रिय गीतों के लिए यह काव्य-प्रवृत्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। नरेंद्र शर्मा इस प्रवृत्ति के प्रतिनिधि कवि हैं। उनका एक गीत 'नींद उचट जाती है' यहाँ संकलित है।

छायावाद के बाद दो काव्य-प्रवृत्तियों (प्रगतिवाद और प्रयोगवाद) का समानांतर विकास दिखाई पड़ता है। प्रगतिवाद ने जहाँ समाज के निम्नवर्ग, शोषित-पीड़ित

जनता के प्रतिनिधि – किसानों और मज़दूरों को कविता में स्थान दिया वहीं प्रकृति के क्षेत्र में आँचलिक एवं गँवई प्रकृति के विभिन्न रूपों को भी उजागर किया। विषयवस्तु के साथ ही प्रगतिवाद ने हिंदी कविता की भाषा का भी जनवादीकरण किया। परिणामस्वरूप लोकजीवन में प्रचलित बोलियों के शब्दों को लेकर कविता फिर जी उठी। जनकवि नागार्जुन उसी काल की देन हैं। नागार्जुन लोक जीवन के कवि और कथाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी कविता 'बादल को घिरते देखा है' इस पाठ्यपुस्तक में दी गई है।

हिंदी काव्य की प्रगतिशील धारा के बाद नयी कविता का दौर शुरू होता है, जिनमें से श्रीकांत वर्मा की कविता 'हस्तक्षेप' को संकलित किया गया है। श्रीकांत वर्मा की अधिकांश कविताएँ भारतीय इतिहास और मिथक के आलोड़न से बनी हैं। उनकी कविताओं में समय और समाज की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं के प्रति क्षोभ, आक्रोश और अस्वीकार का स्वर मुखरित हुआ है। उनमें परिवेश और उसे झेलते मनुष्य के प्रति गहरा लगाव है। श्रीकांत वर्मा में यदि परंपरा का स्वीकार है तो उसे तोड़ने और बदलने की बेचैनी भी है। पाठ्यपुस्तक के अंत में धूमिल को रखा गया है। वे साठोत्तरी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं। धूमिल की कविता में एक आक्रोश है जो व्यक्तिगत न होकर जन आक्रोश है, वही धूमिल की कविता की ताकत भी है। यही नहीं उन्होंने कविता को एक जीवंत भाषा दी जिसका मूल स्रोत आम जनता की बोली में है। 'घर में वापसी' कविता उसका जीवंत प्रमाण है।

इस पाठ्यपुस्तक में चयनित सभी कविताएँ अलग-अलग भावभूमि की हैं, जो यह प्रमाणित करती हैं कि हिंदी कविता के विकास में वस्तु, शैली और शिल्प तीनों में समय-समय पर अपेक्षित परिवर्तन आते रहे हैं। इन परिवर्तनों से विद्यार्थी परिचित हो सकें, चयन के पीछे यही मूल उद्देश्य रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक में हर पाठ के साथ प्रश्न-अभ्यास और विद्यार्थियों के लिए कुछ क्रियाकलाप भी दिए गए हैं। पाठ अधिक-से-अधिक खुलकर विद्यार्थियों के लिए

बोधगम्य बने तथा प्रश्न–अभ्यासों और क्रियाकलापों के माध्यम से वे पाठ के अधिकाधिक निकट पहुँच सकें, यह प्रयत्न किया गया है।

आशा है विद्यार्थियों की भाषिक तथा साहित्यिक रुचियों के विकास की दृष्टि से यह पाठ्यपुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक के परिष्कार के लिए आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव अपेक्षित हैं।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

विषय-सूची

आमुख *iii*

पाठ्यपुस्तक के बारे में *vii*

गद्य-खंड

प्रेमचंद ◻ ईदगाह 3

अमरकांत ◻ दोपहर का भोजन 23

हरिशंकर परसाई ◻ टार्च बेचनेवाले 35

रांगेय राघव ◻ गूँगे 43

सुधा अरोड़ा ◻ ज्योतिबा फुले 54

ओमप्रकाश वाल्मीकि ◻ खानाबदोश 62

गजानन माधव मुक्तिबोध ◻ नए की जन्म कुंडली : एक 79

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ◻ उसकी माँ 91

भारतेंदु हरिश्चंद्र ◻ भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है? 107

काव्य-खंड

कबीर □ अरे इन दोहुन राह न पाई 121
बालम, आवो हमारे गेह रे

सूरदास □ खेलन में को काको गुसैयाँ 126
मुरली तऊ गुपालहिं भावति

देव □ हँसी की चोट 131
सपना
दरबार

पद्‌माकर □ औरै भाँति कुंजन में गुंजरत... 136
गोकुल के कुल के गली के गोप...
भौंरन को गुंजन बिहार...

सुमित्रानंदन पंत □ संध्या के बाद 141

महादेवी वर्मा □ जाग तुझको दूर जाना 150
सब आँखों के आँसू उजले

नरेंद्र शर्मा □ नींद उचट जाती है 157

नागार्जुन □ बादल को घिरते देखा है 161

श्रीकांत वर्मा □ हस्तक्षेप 169

धूमिल □ घर में वापसी 175